Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B.A. Part – II (Hons)

Paper – IV

पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

Notes
GRB BOOKS

## 1. Berkeley's "Conception of God" (बर्कले : ईश्वर)

बर्कले भी लॉक के समान अनुभववादी दार्शनिक थे। बर्कले ने ईश्वर को परम और अनन्त आत्मा माना है। चूंकि हमारी आत्मा इन्द्रियसंवेदनों को स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकती; इसलिए इनकी उत्पत्ति का कारण परमात्मा को मानना चाहिए। ईश्वर ही इन इन्द्रियों संवेदन रूपी विज्ञानों को हमारी आत्मा में उत्पन्न करते हैं। विज्ञान के दो रूप हैं — संवेदन और स्वसंवेदन। संवेदनों की सृष्टि ईश्वर करते हैं। स्वसंवेदनों की सृष्टि आत्मा करती है। बर्कले के अनुसार, विज्ञानों की सत्ता बनी रहती है क्योंकि ईश्वर को उनकी प्रतीति सदा हुआ करती है।

ईश्वर के विषय में बर्कले की अनुमान प्रक्रिया इस प्रकार है; यह मेरी आत्मा में विज्ञानों का अनवरत प्रवाह चलता रहता है जिसकी मुझे प्रत्यक्ष अनुभूति हो रही है। इन विज्ञानों का कोई कारण अवश्य होना चाहिए क्योंकि कोई कार्य अकारण नहीं होता। इन विज्ञानों के चार सम्भावित कारण हो सकते हैं—
1. विज्ञान 2. जड़तत्व 3. जीवात्मा और 4. परमात्मा। विज्ञान स्वयं निष्क्रिय और विषयरूप है। अतः एक विज्ञान दूसरे विज्ञान का कारण नहीं हो सकता। जड़तत्व की कोई सत्ता नहीं है यह सिद्ध किया जा चुका है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

जीवात्मा भी जगत - विज्ञान का कारण नहीं हो सकती, क्योंकि जीवात्मा इन इन्द्रिय संवेदन रूप विज्ञानों को ग्रहण करती है, इन्हें उत्पन्न नहीं कर सकती। ये विज्ञान जीवात्मा की इच्छा या संकल्प पर निर्भर नहीं होते। यदि मेरी इन्द्रियाँ ठीक काम करती हैं और मेज मेरे सामने है, तो मुझे मेज विज्ञान का ग्रहण करना ही पड़ेगा। पुनश्च इस विज्ञान किसी विशेष आत्मा में उत्पन्न नहीं होते, किन्तु सभी आत्माओं में जो समान दशा में हैं, लगभग समान रूप में उत्पन्न होते हैं और इन जगत विज्ञानों में एकतन्त्र और निश्चित क्रम है। अतः इनको जीव सृष्ट न मानकर ईश्वर सृष्ट ही मानना पड़ता है। यह विश्वास अन्धविश्वास नहीं है। यह एक तर्कयुक्त और अन्तर्बोध का विश्वास है।

ईश्वर का ज्ञान सदा नित्य अन्तर्बोध रूप में होता है अतः वह नित्य और सत्य है। ईश्वर के विज्ञान "नित्य और मौलिक बिम्ब" हैं। हमारे विज्ञान "आनित्य और गौण" प्रतिबिम्ब हैं। बिम्ब विज्ञानों का ज्ञान ईश्वर को होता है, हमें नहीं हो सकता। प्रतिबिम्ब विज्ञान ईश्वर द्वारा सृष्ट होते हैं, किन्तु इनका ज्ञान हमें होता है। ईश्वर को प्रतिबिम्ब विज्ञानों के ज्ञान की अपेक्षा नहीं क्योंकि उन्हें सदा ही,

सुगम्य पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

इनके मूल बिम्बों का ज्ञान होता रहता है। जगत की पारमार्थिक सत्ता ईश्वर द्वारा अनुभूत होने में है (Esse est concipi) हमारी अनुभूति का विषय बनने में जगत की केवल व्यावहारिक सत्ता है (Esse est percipi) अर्थात ईश्वर के विज्ञानरूप रूप में यह जगत नित्य सत्य और शाश्वत है किन्तु हमारे विज्ञान रूप में यह अनित्य और क्षणिक है।

इस प्रकार बर्कले के अनुसार ईश्वर के यही सब गुण हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS